शिवशक्ति सरस्वती माँ

11. एक बार मम्मा से पूछा गया, ''आप से पहले भी आयी हुई बहनें यज्ञ में बहुत थीं, फिर भी आप अपने पुरुषार्थ में सब से आगे बढ़ीं, आप में ऐसी कौन-सी एक बात थी जो आप सबसे आगे चली गयी ?'' मम्मा ने कहा,''यह तो बहुत कठिन प्रश्न है क्योंकि कोई व्यक्ति एक ही बात से आगे नहीं बढ़ता। कई बातें होती हैं, उन सबके तालमेल से व्यक्ति जीवन में आगे बढ़ता है।'' मैंने कहा, नहीं, मैं एक ही बात जानना चाहता हूँ जिससे ही आप पुरुषार्थ में आगे बढ़ीं। काफ़ी समय सोचने के बाद मम्मा ने कहा, मैं समझती हूँ कि मेरे में जो दृढ़ता है ना कि एक बार कोई संकल्प किया तो उसको किसी भी हालत में पूर्ण करना ही है, इसी गुण से मैं आगे बढ़ रही हूँ।

12. उनकी धारणा बहुत उच्च कोटि की थी। मम्मा बोलती बहुत कम थीं। केवल क्लास में या किसी से व्यक्तिगत रूप में मिलते समय ही हम उनकी आवाज़ सुनते थे। परमात्मा की याद में लवलीन रहने की उनकी एक स्वाभाविक स्थिति होती थी। उनके आस-पास के प्रकम्पनों से जो अपनेपन का अनुभव होता था वह बहुत सुखद प्रतीत होता था। उनके हर शब्द में ज्ञान समाया रहता था। यूँ कहे, उनके रोम-रोम में ज्ञान समाया हुआ था। उनको देखते ही परमात्मा की याद में हमारा मन मगन हो जाता था। याद करने की मेहनत नहीं करनी पड़ती थी। परमात्मा पिता की याद सहज आती थी।

13. मम्मा में संगठन करने की शक्ति बहुत श्रेष्ठ और जबर्दस्त थी, सबको साथ लेकर चलने की कुशल कला थी। उनमें व्यक्तिगत धारणायें थीं, उदाहरणार्थ बाबा ने कहा और मम्मा ने धारण किया इसमें नम्बर वन थीं। सहज रूप से माँ के जो संस्कार होते हैं वे उनके अन्दर पूर्णरूपेण थे। समर्पित होने का उनका वह तरीक़ा, जिसको झाटकू कहते हैं, कई भाई-बहनों के लिए एक आदर्श बना, बहुतों के जीवन-उद्धार का प्रेरणा-स्रोत बना। सबसे बड़ी बात है कि उनको सबने यज्ञमाता के रूप में स्वीकार कर लिया था। उनको देखते ही हरेक को स्वाभाविक रूप से माँ की भासना आती थी। उन्होंने हरेक की ज़रूरतों को बिना माँगे पूरा किया। किसी को कोई वस्तु माँगने का अवसर ही नहीं दिया। किसी धर्म, जाति, पंथ वाला हो हरेक ने यही बेहद का अनुभव किया कि यह मेरी माँ है, मेरी हितचिन्तक है।